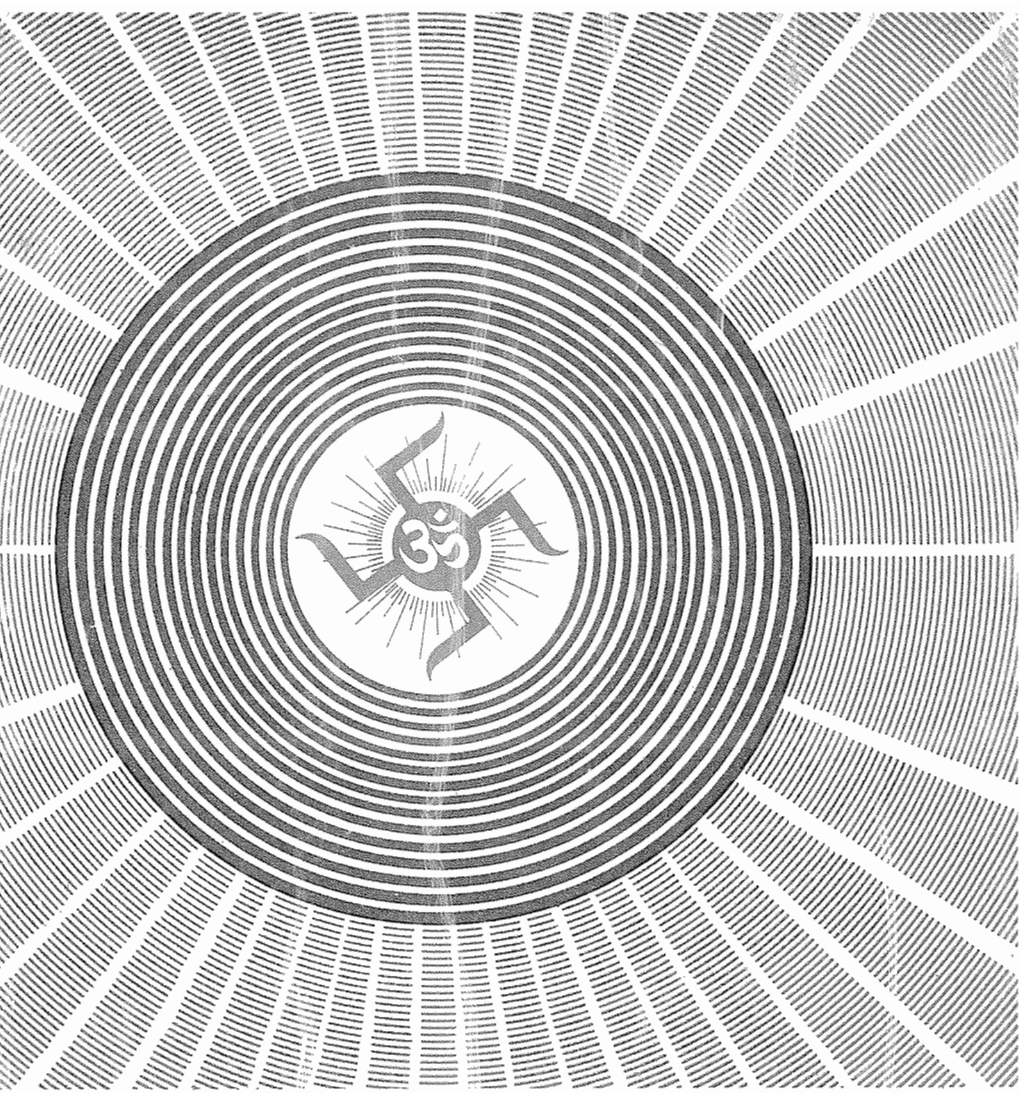

आप्तवाणी

નમો અરિહંતાણં

શ્રી સીમંધર સ્વામી

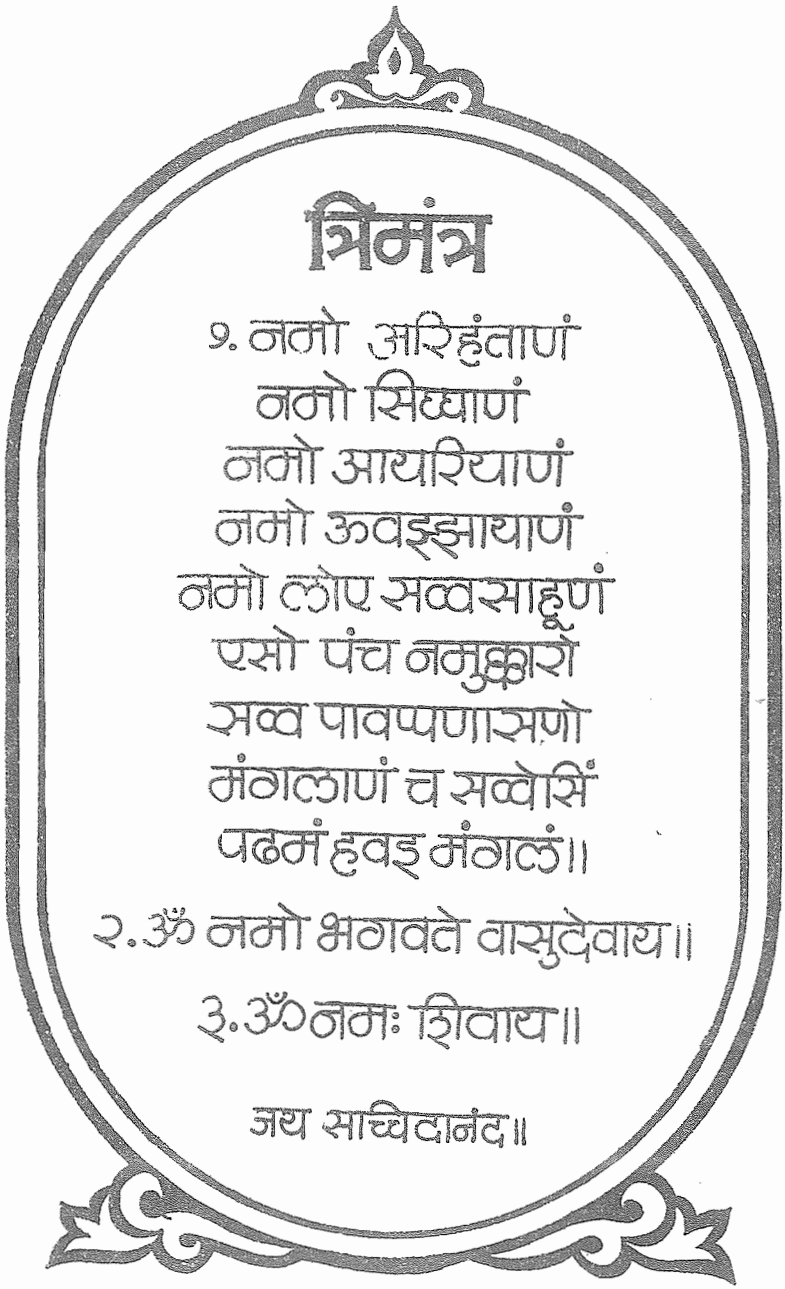

त्रिमंत्र

१. नमो अरिहंताणं
नमो सिध्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं॥

२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

३. ॐ नमः शिवाय॥

जय सच्चिदानंद॥

आप्त विज्ञापन

हे सुज्ञ जन ! तेरा ही स्वरुप आज मैं तेरे हाथमें आ रहा हूँ ! उसका परम विनय करना कि जिससे तुं तेरे द्वारा तेरे 'स्व' के ही परम विनय में रहकर स्व-सुखवाली, पराधीन नहीं ऐसी, स्वतंत्र आप्तताका अनुभव करेगा।

यही ही सनातन आप्तता है, अलौकिक पुरुषकी आप्तवाणीकी।

यही सनातन धर्म है, अलौकिक आप्तताका।

जय सच्चिदानंद

ॐ

नमो वीतरागाय !

'Science of Absolutism' के 'Absolute Scientist' की

आप्तबाणी

समर्पण

अहो ! अहो !! यह अक्रममार्गी आप्तबाणी ।
तेजपूंज प्रगटाती, अज्ञान नाशकारीणी ।
हजारोंका अंतरदाह छूडाते, प्रगट मोक्षदानी ।
अहा ! कुदरती बलिहारी, परमाश्चर्य होनी ।

आप्तपुरुष श्रीमुखसे निकली आप्तबाणी ।
हृदयस्पर्शीणी अनंत संसार विनाशीनी ।
स्याद्वाद अनेकांत नीजपदकी ही बाणी ।
सर्वनय सदा स्वीकार्य, मोक्षार्थ प्रमाणी ।

संसार, मोक्षपथ पर परम विश्वासनीया ।
अनादि अंधेरेमें प्रगट प्रत्यक्ष दिया ।
विज्ञानी वीतरागी वाणी वचनसिद्धता ।
कारुण्य भावसे जगकल्याणार्थे समर्पिता ।

मंगलाचरण

निज स्वभावसे सद् गुरु, अगुरु-लघु सर्वज्ञ है,
सूक्ष्मतमा सिध्ध परमगुरु, सत्यम निश्चय वंद्य है।

तेत्तीस कोटी देवगण, विश्वहितार्थे स्वागतम,
जगकल्याणक यज्ञ में, मंगलमय हो आशिषम।

सिध्ध स्वरुपी मूर्तमोक्ष, गलती भूलको माफी दो,
व्यवहारे सद् बुध्धि हो, निश्चयमें अभिवृध्धि हो।

ॐ

जय सच्चिदानंद

प्रकाशन

आप्तवाणी

जय सच्चिदानंद प्रकाशन

: प्रकाशक :
'जय सच्चिदानंद संघ' की तरफसे
सकल संघपति
श्री खेतशी नरशी शाह
२०/१०, एन्जल लेन्ड,
नायगांव क्रोस रोड,
वडाला, बम्बई ४०० ०३१
टे. नं. ४१२६६६६, ४१२६१०८

: कोपी राईट :
जय सच्चिदानंद संघ
मुंबई

मूल्य:
''परम विनय''
और
''मैं कुछ भी जानता नहीं''
यह भाव

: आवृत्ति १
प्रथम २७, अप्रैल, १९८५
वि. सं. २०४१, वैशाख शुदि सप्तमी शनिवार

प्रत :
२,०००

आवृत्ति २
१९८६
प्रत :
२,०००

Printed by:
Kantilal Chheda, Chheda Photo Offset, Wadala, Bombay-400 031. Tel. : 412 41 41

[९]

१) कुदरतकी व्यवस्थाका प्रमाण ! ३५
२) Development का प्रमाण ! ३६
३) आंतरसुख-बाह्यसुखका Balance ! ३८

[१०]

१) प्रत्येक effect में couses किस का ? ४२
२) End, दुनियाका या 'व्यवहारका' ? ४५
३) आप क्या कर सकते हो ?! ४७
४) Egoism का विलय कैसे ? ५०
५) नीर-अहंकारीका संसार कौन चलाएगा ? ५१

[११]

१) Permanent शांति कैसे ? ५२
२) संसार परिभ्रमणका Root Couse ! ५४
३) विशेष परिणामका सिद्धांत ५६
४) संसारमें मोक्ष (!) अनुभव कैसे ? ६०

[१२]

१) संसारमें: Main Production By Product ! ६२
२) जगतकर्ता-वास्तवमें कौन ? ७३

[१३]

१) भगवानके दर्शन कैसे करना ? ८५
२) प्रत्यक्ष भक्ति-किस पुरुषकी ? ८७

[१४]

१) विज्ञानकी भाषामें धर्मका स्वरुप ! ९२
२) आत्मज्ञान— प्राप्ति कैसे ?! ९३
३) "ज्ञानी पुरुष"— किसे कहा जाय ? ९५

[१५]

१) मनुष्यभवकी सार्थकता ! ९८
२) कषाय नीकालना या आत्मज्ञान जानना ? १००
३) बंधनकर्ता-संसार या अज्ञान ? १०२
४) अनंतशक्तिवाला — बंधनमें ! १०४
५) गति परिभ्रमणसे छूटकारा कैसे ? १०६

[१६]

१) क्या, पुनर्जन्म है ? १११

[१७]
१) कर्म, कर्मफलका Science ! ११६
[१८]
१) कर्तापद या आश्रितपद ? १२७
२) व्यवहार—जगतमें, अपनी सत्ता कितनी ? १२८
३) Drama कभी सच हो सकता है ?! १३१
[१९]
१) मनुष्य चिंतामुक्त हो सकता है ? १३३
[२०]
१) सुख, दुःखका वास्तविक स्वरूप ! १३९
[२१]
१) क्या आप शंकरके भक्त हो ? १४५
[२२]
१) 'ज्ञानी'' मिले तो क्या लोगे? १४८
२) व्यापारमें धर्म रखा ? १४९
[२३]
१) View Point का मतभेद— उपाय क्या ? १५१
२) सुखप्राप्तिके कारण ! १५३
३) वर्तमानमें रहोगे कैसे ? १५४
[२४]
१) Underhend के Underhend बन सकोगे ? १५६
[२५]
१) मारने का अधिकार किसे ? १५९
२) निमित्तको निमित्त समझे, तो...? ---------- १६२
३) व्यवहारमें शंका ? समाधान विज्ञानसे ! १६३
[२६]
१) क्या आपको दुःख है ? १६४
[२७]
१) हिसाबी व्यवहारकी कहां तक Real मानोगे ? १६९
२) कितनी खोट खाओगे ? एक या दो ? १७५

[२८]

१) कुदरतका दर असल न्याय ! १७८

[२९]

१) ऊर्ध्वगतिके Laws ! १८३

[३०]

१) जिवनमें मरजियात क्या ? १८९
२) प्रारब्ध, पुरुषार्थका Demarkation ! १९१

[३१]

१) व्यवहारके हिसाबी संबधमें समाधान कैसे ? १९५

[३२]

१) गृहस्थिमें मतभेद— Solution कैसे ? १९९
२) पीछले जन्मकी पत्नीका क्या ? २०१
३) बीबीसे Adjustment की चाबी ! २०२

[३३]

१) अहंकारकी करामत २०५
२) माबापकी जिम्मेदारी कितनी ? २०६
३) व्यवहार निःशेषका equation ! २०७

[३४]

१) व्यवहारः कौन करनेवाला ? कौन जाननेवाला २११

[३५]

१) भगवान कब मीले ? २१६
२) ज्ञानीओंकी भाषामें जिता, मरता कौन ? २१९
३) अंतमें वेद क्या कहते है ? २२१
४) वीतराग मार्गमें २२३
५) ज्ञानी बिना द्रष्टिभेद कौन कराये ? २२६
६) भगवान- प्रेम स्वरूप या आनंद स्वरुप ... २२८
७) प्राप्तिकी पसंदगी ! २२९
८) भक्ति ज्ञानके पहले या ज्ञानके बाद ? २३२
९) व्यवहारकी खास दो बातें ! २३३
१०) निर्दयता, दया, करुणाका भेद ! २३४
११) अनुभूति बीना बातें क्या ? २३६

[३६]
१) क्या भगवान अवतार लेते है ? २४१
२) योगेश्वर कृष्ण, Real स्वरूपमें ! २४४
३) निष्काम कर्मसे कर्मबंध ? २४६
४) खुदाका स्वरुप- हकिकतमें क्या ? २४८
[३७]
१) भगवानकी अनुभूतिका प्रमाण ! २५२
[३८]
१) Puzzlesome World की वास्तविकता ! २६२
२) तो भगवानकी भजना कैसे करें ! २६६
[३९]
१) जगतमें आत्मा एक या अनेक ? २७०
२) आत्माका स्थान कहाँ ? २७२
३) आत्माका Real स्वरूप ! २७३
४) सक्रियतामें शुद्ध चेतन कहाँ ? २७४
५) क्या चेतन सर्वत्र है ? २७६
[४०]
१) 'खुली आँखसे' 'जागृत' कौन ? २७८
२) जागृतिका परिणाम ! २८१
[४१]
१) धर्माधर्म और स्वाभाविक धर्म २८३
२) Creation का कर्ता कौन ? २८६
३) भगवान इच्छाशक्तीवाला ? २८७
४) विश्व चलानेमें इच्छा किसकी ? २८८
५) मालिकी भाव, वहाँ चेतन ? २९०
६) आत्म अनुभव:ज्ञानसे या विज्ञानसे ? २९२
७) महत्त्वता, भौतिक ज्ञानकी या स्वरूप ज्ञानकी ? २९३
८) ये चमत्कार या यशनाम कर्म ? २९५
९) ज्योतिष ज्ञानकी Correctness ! २९६
[४३]
१) शाश्वत पद — अधिकारी कौन ? २९८
२) 'सूक्ष्म शरीर' क्या है ? २९९
३) सनातन वस्तुओमें मृत्यु (!) किसकी ? ३००

[४४]
१) साध्य प्राप्तिमें 'आवश्यक' क्या ? ३०३
[४५]
१) क्या पसंद ? सीडी या Lift ३०६
२) वस्तुका त्याग ? नही, मूर्च्छाका ! ३१०
[४६]
१) अपनी भूलसे छूटना कैसे ? ३१५
२) मोक्षका तप ! ३१६
३) मुमुक्षुके लक्षण ३१८
४) व्यवहारका निरीक्षक परीक्षक कौन ? ३२०
५) 'ज्ञानी' 'कारण' सर्वज्ञ ! ३२१
[४७]
१) आत्मप्राप्ति शास्त्रसे या 'ज्ञानी' से ? ३२३
२) 'देहाध्यास' छूटे कैसे ? ३२४
३) 'निजदोष-क्षय' का साधन ! ३२४
४) यर्थाथ साधु ! ३२६
५) आराधना वीतरागकी या पुद्गलकी ? ३२८
[४८]
१) धर्मध्यान, शुक्लध्यान - प्राप्तिका मार्ग ! ३३२
[४९]
१) प्रभुको पहचाना ? ३३९
२) कषायोसे मुक्तिका मार्ग ! ३४१
३) सच्चा संन्यासी ! ३४३
४) कषाय, आत्मगुण या जडका गुण ? ३४५
[५०]
१) ध्यान, ध्याता - ध्येयका अनुसंधान ! ३४६
२) क्या, योगमार्गसे 'प्राप्ति' है ? ३४८
३) गुरु और ज्ञानी ! ३४९
४) अेकाग्रता - व्यग्रतामें ! ३५१
५) सच्ची समाधिका स्वरूप ! ३५१
[५१]
१) विश्वके सनातन तत्त्व ! ३५५
२) चित्तका स्वरूप ४०४

३) बुध्धिका Science ४०६
४) 'अहम्‌कार' का Solution ! ४१२

[५२]

१) ज्ञान, अज्ञानका भेद ! ३६३
२) चेतन तत्त्वको देखना कैसे ? ३६४
३) आत्मशक्ति और प्राकृत शक्ति ! ३६५
४) जड, चेतनः स्वभावसे ही भीन्न ! ३६६
५) सर्वव्यापी, चैतन्य या चैतन्यप्रकाश ? ३६८
६) सत्य क्या ? ब्रह्म ? जगत ? ३६९
७) आत्मा, द्वैत या अद्वैत ? ३७०
८) आत्मा— निर्गुण या सगुण ? ३७२

[५३]

१) जगतका कर्ता— है या नहीं ? ३७३

[५४]

१) कर्म, कर्म चेतना, कर्मफल चेतना ! ३७६
२) 'आगमके शब्द' 'ज्ञानी' बीना कौन समझाये ? ३८१

[५५]

१) साक्षीभाव रखना या आत्मरूप होना ? ३८९

[५६]

१) अंतःकरणका स्वरूप ! ३९३
२) मनोग्रंथीसे मुक्ति कैसे ? ३९४
३) Mind के Father-Mother कौन ? ३९७
४) चित्तका स्वरूप ! ४०४
५) बुध्धिका Science ४०६
६) 'अहम्‌कार'का Solution ४१२

[५७]

१) मोक्षमार्गमें - गुरु या ज्ञानी ? ४१७
२) Real में, Relative में — ज्ञानी की ज्ञानदशा ! ४१९
३) ज्ञानी कृपा-द्रष्टिका फल ! ४२१
४) ''ज्ञानी पुरुष'' को पहचाना ? ४२२

प्रकाशकिय

भारत आध्यात्मिक देश है। यही भारतभूमि पर आज आत्मज्ञानी अक्रम विज्ञानी दादा भगवान विद्यमान होते हुए विचर रहे हैं। पू. दादा भगवान की अनुभवयुक्त ज्ञानबाणी आज पर्यंत के अनेक वर्षो के सत्संग प्रसंगो में जिज्ञासु सुज्ञ जनों के प्रश्नों के निमित्ताधीन प्राप्त होते रही है। यह बाणी अनेक पुस्तकों में गुजराती भाषा में प्रकाशित की गई है और यह सिलसिला अब भी जारी है।

सत्संगमें कई प्रसंगो पर हिन्दीभाषी महानुभावो के प्रश्नों का निमित्त पाकर प. पू. दादा भगवान से हिन्दी में भी अद्‌भूत अनुभवज्ञान बाणी प्राप्त हुई है। भारत में बहुजन समुदाय जो हिन्दीभाषी है उन का आध्यात्मिक उत्कर्ष लाभार्थे दादा भगवान की स्वयं नीकली हुई आप्तबाणी हिन्दी का एक ग्रंथ प्रकाशित किया जाय ऐसी भावना थी। उस भावना तद्‌नुरूप यह ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है।

आत्मानुभवी ज्ञानी पुरुष की बाणी प्रत्यक्ष सरस्वती एसी स्यादवाद बाणी कहलाती है। स्यादवाद बाणी वह वीतराग बाणी है, जो ज्ञानी पुरुष द्वारा निष्कारण करुणा भाव से जगत के जीवमात्र का कल्याण के हेतु नीकलती है। यह ज्ञानबाणी जो हिन्दी भाषा में ही प्राप्त हुई उसे संकलित कर के प्रकाशित करने का यह लघुप्रयास है, और आत्यंतिक कल्याण के लिए यह ज्ञानग्रंथ, आत्मज्ञानी दादा भगवान की प्रत्यक्ष प्राप्ति का संयोग की भावना में परिणामे एसी प्रार्थना है। जिस से आत्मार्थी सुज्ञ जनों को आत्म-कल्याण की जिज्ञासा तीव्र हो और वे प्रगट ज्ञानी पुरुष दादा भगवान का प्रत्यक्ष सत्संग का लाभ लेके अपनी समस्याओं का संपूर्ण समाधान करें और आत्मज्ञान का संपूर्ण फायदा उठावे।

परमार्थी श्रीमती सरलाबहन सुमनभाई शाह, अंधेरी, बम्बई-ने यह पुस्तक के प्रकाशन में उत्कृष्ट भाव से उत्कृष्ट सहकार दिया है इन का हम बहुत बहुत आभार मानते है। यह उन का पुरुषार्थ अन्य मुमुक्षुओं को प्रेरणा का निमित्त बनेगा यही अभ्यर्थना है।

यह अद्‌भूत ज्ञानग्रंथ का उत्कृष्ट संकलन और संपादन किया है महात्मा डॉ. नीरुबहनजी अमीनने, उस के लिए मैं अपनी तरफ से और संघ की तरफ से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। महात्मा दिपक ईन्दुभाई देसाई और महात्मा योगेश ईश्वरभाई मिस्त्री का ईस संपादन और संकलन के कार्य में महत्त्वपूर्ण और अमूल्य सहयोग मिला है उन के लिए मैं अपनी तरफ से और संघ की तरफ से आभार व्यक्त करता हूँ।

खेतशी नरशी शाहका

जय सच्चिदानंद

हमारी हिन्दी !

दादाश्री : हमारी हिन्दी बरोबर ठीक नहीं है ने ?
प्रश्नकर्ता : नहीं, अैसी बात नहीं है। आप हिन्दी अच्छी बोल रहे है।
दादाश्री : हमको हिन्दी बोलनेको नहीं आता।
प्रश्नकर्ता : नहीं, आपकी हिन्दी बहोत मीठी है, आप बोलिए।
दादाश्री : मीठी तो मेरी वाणी है, हिन्दी नहीं ! मेरी speech मीठी है।

आपको मेरी बात समजमें आती है ने ? अैसा है कि हमारी हिन्दी Language पे काबु नहीं है, खाली समझनेके लिए बोलता है। 5% हिन्दी है और 95% दूसरी सब mixture है। मगर tea जब बनेगी, तब tea अच्छी हो जायेगी।

दादा भगवान

संपादकिय

डॉ. नीरुबहेन अमीन

संसारका बंधन किससे ?

अज्ञानतासे।

अज्ञानता कैसी ?

निज स्वरुपकी।

अज्ञानता जाय किस तरहसे ?

ज्ञानसे, निज स्वरुपके ज्ञानसे। 'मैं कौन हूँ' इसकी पहचानसे।

'मैं कौन हूँ' की पहचान कैसे हो ?

प्रत्यक्ष प्रगट ''ज्ञानी पुरुष'' मिले, उनकी पहचान हो, उनकी द्रष्टिसे अपनी द्रष्टि मिल जाय, तब।

और ''ज्ञानी पुरुष'' के लक्षण ?

जो निरंतर आत्मामें ही रहते है, निरंतर स्वपरिणति ही जिनकी है, जिन्हें इस संसारकी कोई भी विनाशी चीज नहीं चाहिये, कंचन-कामिनी, कीर्ति, मान, शिष्यकी भीख जिन्हें नहीं है वे ''ज्ञानी पुरुष''। ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' मिल जाय तो उनके चरणोमें सर्वभाव समर्पित करके आत्मा प्राप्त कर लेना चाहिये। स्वयं आत्मज्ञान पाना अति अति कठिन है, ''ज्ञानी पुरुष'' मिले तो अति अति सरल है। लेकिन ''ज्ञानी पुरुष'' की उपस्थितिमें भी ज्ञानी पुरुषकी पहचान सामान्य जनको होना बहुत कठीन है। जौहरी होगा वह तो हीरेको परख लेगा ही। किन्तु ''ज्ञानी पुरुष'' को पहचाननेवाले जौहरी कितने ? प्रस्तुत ग्रंथकी प्रस्तावनामें ''ज्ञानी पुरुष'' की पहचान, उनकी दिव्यता, भव्यता, उनका अदभूत दर्शन, ज्ञान, वाणी और उनकी आंतरिक परिणतिके बारेमें प्रकाश डालनेका अल्प प्रयास किया गया है, जो सुज्ञ वाचकको ''ज्ञानी पुरुष'' की पहचान और उनके प्रति अहोभाव प्रगट करनेमें सहायक हो सकेगी।

◇◇◇

''दादा भगवान'' कौन है ?

जो दिखाई देते है, वे ''दादा भगवान'' नहीं है। वे तो 'अे. अेम. पटेल.' है, लेकिन भीतरमें जो प्रगट हो गये है, वह ''दादा भगवान'' है, वह चौदह लोकके नाथ है। तुम्हारे अंदर भी वही ''दादा भगवान'' है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि ''ज्ञानी पुरुष'' के अंदर (भीतर) संपूर्ण व्यक्त, प्रगट हो गये है, और तुम्हारी अंदर व्यक्त नहीं हुअे। अंदर प्रगट हुअे है, उन ''दादा भगवान'' के साथ ''ज्ञानी

पुरुष '' निरंतर रहते है। जब व्यवहारका उदय होता है तब 'अे. अेम. पटेल के साथ होना पडता है, नहीं तो 'दादा भगवान' के साथ अभेद स्वरुपसे तद्‌रुप ही रहते है।

दादा भगवानका स्वरूप क्या है?

ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य और तप इसके द्वारा जो अनुभवमें आते है, वही ''दादा भगवान'' है। इस देहमें जो 'मीकेनिकल' विभाग है, चंचल विभाग है, वह ''दादा भगवान'' नहीं है। अचल विभाग है, दर असल आत्मा है, वह ''दादा भगवान' है। जो खाते है, पीते है, धंधा करते है, शास्त्र पढते है, या तो धर्मध्यान करते है, वह सब मीकेनिकल है, वह दरअसल आत्मा नहीं है। दरअसल आत्मा तो स्वयं परमात्मा है, वोही ''दादा भगवान'' है।

इसमें ''ज्ञानी पुरुष'' कौन?

जो ज्ञानकी वाणी बोलते है, उन्हें व्यवहारमें ''ज्ञानी पुरुष'' कहते है। और भीतरमें प्रगट हुअे बिना ज्ञानकी वाणी नहीं बोली जा सकती। भीतरमें प्रगट हुअे है, वोही ''दादा भगवान'' है। ''ज्ञानी पुरुष'' के जो सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष है, जो लोगोंकी समजमें भी नहीं आ सकते, और जगतके कोई जीवको किंचित्‌ ही नुकसानकर्ता नहीं, अैसे दोषको जो प्रकाशमान करते है वह ''दादा भगवान'' है, और ''ज्ञानी पुरुष'' वे दोषको 'उनके' प्रकाशमें जानते है। अैसे पूर्ण स्वरुप ''दादा भगवान'' का पद प्राप्त करनेके लिए, 'उनके' साथ अभेद रहनेके लिए ''ज्ञानी पुरुष'' खुद ''दादा भगवान'' को नमस्कार करते है, उनकी भजना करते है।

१९५८ में सूरत स्टेशन पे उन्हें आत्मज्ञान अपने आप प्रगट हुआ। ज्ञानके प्रागट्यका कारण बताते हुअे ''दादाश्री'' कहते है कि कितने जन्मजन्मोकी लिंकका यह फल है। वह अनुभूति होनेके बाद उनका 'ईगोईझम' और ममत्व खत्म हो गये और 'खुद' मन, वचन, कायासे बिलकुल भिन्न हो गये। यह ज्ञान प्रगट हुआ, उसी दिन 'खुद' ''ज्ञानी'' हुअे उसके अगले दिन तो वे अज्ञानी ही थे अैसी हकीकत वे बताते है। ज्ञानप्राप्ति के बाद आत्माका स्पष्ट अनुभव हुआ, पूर्णाहूति हुई। बादमें उन्होंने ''अंबालाल मूलजीभाई पटेल'' के साथ अेक क्षण भी, आज पच्चीस सालसे, तन्मयता नहीं की। जब से ज्ञान प्रगट हुआ है, तब से 'अंबालाल' उनके सर्व प्रथम पडौसी है; पडौसीकी माफिक ही रहते है। देह और आत्माकी कैसी भिन्नता!!!

दादाश्रीको कैसा ज्ञान प्रगट हुआ है? उन्हें 'केवलज्ञान' में सिर्फ चार डीग्रीकी ही कमी है। 'केवलज्ञानी' को ज्ञानमें सब 'दिखता' है और उन्हे वह सब 'समज' में आता है। 'दर्शन' संपूर्ण है, 'ज्ञान' में चार डीग्रीकी कमी है।

''ज्ञानी पुरुष'' तो कहते है कि 'मुझे इस संसारमें कुछ भी नहीं आता। मैं आत्माकी बातके अलावा ओर कुछ नहीं जानता। 'आत्मा' ज्ञाताद्रष्टा है वह 'मैं' जानता हूँ। 'आत्मा' जो 'देख' सकता है वह 'मैं' 'देख' सकता हूँ। व्यवहारमें वे धंधादारी आदमी है, 'इन्कम टेक्स, सेलटेक्स' सभी भरते है, कंट्राक्टका नंगा धंधा भी करते है, फिर भी इन सबमें ''ज्ञानी पुरुष'' संपूर्ण वीतराग रहते है। वह वीतराग कैसे रहते है? आत्मज्ञानसे! संपूर्ण जागृतिसे!!

कइ लोग उन्हें पूछते है कि आपको यह सिद्धि किस तरह प्राप्त हुई? उसका

उत्तर देते हुए दादाश्री कहते है कि क्या इसकी नकल करनी है? यह नकल करने जैसी चीज नहीं है। यह तो 'बट नेचरल' प्रगट हो गया है। उन्हें भी पता नहीं था कि इतना बडा 'लाईट' हो जायेगा। उन्हें तो छोटेसे दियेकी, 'समकित' जैसा कुछ इस जन्ममें प्राप्त होगा ऐसी आशा थी। मगर यह तो संपूर्ण प्रकाश हो गया, संपूर्ण निर्विकल्प पद प्राप्त हुआ।

'भगवान' संज्ञा यह नाम है या विशेषण? 'भगवान' तो विशेषण है और जो भी कोई मनुष्य भगवत् गुणोंकी प्राप्ति करता है, उसे यह विशेषण मिलता है। ''ज्ञानी पुरुष'' का पद तो निर्विशेष पद है, उनको तो किसी भी विशेषणकी क्या जरुरत? ''ज्ञानी पुरुष'' को 'भगवान' कहना याने उनको हीन पद में बिठाने जैसा है।

जो मनका मालिक नहीं, देहका मालिक नहीं, वाणीका मालिक नहीं, कोई चीजका मालिक नहीं वह इस संसारमें भगवान है। ''ज्ञानी पुरुष'' देह होने के बावजूद भी एक क्षण भी देहके मालिक नहीं होते। ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' सारी परसत्ताको जानते है और स्वसत्ताको भी जानते है। खुदकी, स्वसत्तामें वे ज्ञाताद्रष्टा, परमानंदी रहते है।

''ज्ञानी पुरुष'' अेक क्षण, पल भी संसारमें नहीं रहते। और अेक क्षण भी अपने स्वरुपके सिवा अन्य कोई संसारी विचार उनको नहीं आता। ''ज्ञानी पुरुष'' में तो अपनापन ही नहीं रहता। देहके मालिक नहीं होते, इसलिए उन्हे मरना भी नहीं पडता, खुद अमरपदमें रहते है। और ''ज्ञानी कृपा'' का इतना सामर्थ्य है कि वही पद वे दुसरों को दे सकते है, जो बडी आश्चर्यकारी बीना है। ''ज्ञानी पुरुष'' निरंतर शुद्ध उपयोगमें रहते है, वो शुद्ध उपयोग मुक्तिमें फलित होता है। और निरंतर शुद्ध उपयोगी है, मन, वचन कायाका मालिकी भाव नहीं, इसलिए उन्हें हिंसाका दोष नहीं लगता, हिंसाके सागरमें रहते हुअे भी!! आत्मपरिणाममें ही जिसकी निरंतर स्थिति है, उसे कोई कर्म ही स्पर्श नहीं करता। अैसी अदभूत दशा ''ज्ञानी पुरुष'' की है। जो देहके स्वामि नहीं वे समग्र ब्रह्मांड के स्वामि है।

यह 'अे. अेम. पटेल' जो दिखाई देते है, वह है तो मनुष्यही, किन्तु 'अे. अेम. पटेल' की जो वृत्तियाँ है, और उनकी जो अेकाग्रता है, वह पररमणता भी नहीं और परपरिणाम भी नहीं। निरंतर स्वपरिणाम में ही उनकी स्थिति है। निरंतर स्वपरिणाममें रहनेवाले कभी कभार हजारों वर्षोंमें अेक होते है!! आंशिक स्वरमणता किसीको हो सकती है, किन्तु सर्वांश स्वरमणता, वह भी संसारीवेषमें नहीं होती। इसलिए इसे आश्चर्य लीखा गया है न! असंयति पूजा नामक धीट आश्चर्य है यह!!!

आत्मपरिणाम और क्रियापरिणाम, ज्ञानधारा और क्रियाधारा-दोनो ''ज्ञानी पुरुष'' में भिन्न भिन्न वर्तनामें होती है। ''ज्ञानी पुरुष'' को निरंतर स्वभाव-भाव होता है। जो कषाय रहित है, जहाँ परपरिणति उत्पन्न नहीं होती, अैसे ''ज्ञानी पुरुष'' के दर्शन मात्रसे कल्याण होता है।

''ज्ञानी पुरुष'' याने संपूर्ण प्रकाश! प्रकाशमें कोई अंधेरा टीक नहीं सकता। वह सब कुछ जानते है कि विश्व क्या है, किस तरह चलता है, भगवान कहाँ है, हम कौन है? ''ज्ञानी पुरुष'' तो 'वर्ल्ड की ऑब्झर्वेटरी' है। विश्वमें अेक भी अैसा परमाणु नहीं कि जो उन्होंने देखा न हो, अेक विचार अैसा नहीं कि जो

उनके ध्यानके बाहर रह गया हो।

''ज्ञानी पुरुष'' 'केवलज्ञान' में देखकर तमाम प्रश्नों के तत्क्षण समाधान-कारी प्रत्युत्तर देते है। उनके जवाब किसी शास्त्रके आधारसे नहीं नीकलते, मौलिक जवाब रहते है। वे सोच करके शास्त्रका याद करके नहीं बोलते, 'केवल ज्ञान' में 'देखकर' बोलते है। 'केवल ज्ञान' के चंद क्षेत्रोंको वे देख नहीं पाते। इस कालमें, इस क्षेत्रमें संपूर्ण केवलज्ञान असंभव है। मतिज्ञानसे लेकर केवलज्ञान तकके सर्व दर्शनकी बात उन्होंने सुस्पष्ट की है। उनकी बातें स्थूल, सूक्ष्मसे भी उपरकी सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमकी है।

''ज्ञानी पुरुष'' के मुख पर निरंतर मुक्तहास्य होता है। कषायसे मुक्त होने पर मुक्तहास्य उत्पन्न होता है, सारा विश्व निर्दोष दिखाई देने पर मुक्तहास्य उत्पन्न होता है, और मुक्तहास्यवाले पुरुषके दर्शनमात्रसे कल्याण होता है। मनसे मुक्त, बुद्धिसे मुक्त, अहंकारसे मुक्त, चित्तसे मुक्त, वहाँ मुक्त हास्य! वीतरागता है वहाँ मुक्त हास्य है। ऐसा मुक्तहास्य सिर्फ ''ज्ञानी पुरुष'' को ही होता है। मुक्तहास्य तो विश्वकी अजायब चीज है।

''ज्ञानी पुरुष'' को जबरदस्त यशनामकर्म होता है। इसलिए उनके नामसे अनेकोंके काम सिद्ध हो जाते है। ''ज्ञानी पुरुष'' इसे चमत्कार या 'मैंने किया' ऐसा कभी नहीं कहते. इसे वह यशनाम कर्मका फल कहते है। वे नहीं चाहते फिर भी लोग उनपर यशकलश डाले बिना नहीं रहते। ''ज्ञानी पुरुष'' को अनंत प्रकारकी सिध्धियां होती है। जिसे विश्वकी किसी चीजकी अपेक्षा नहीं होती, उन्हें अनंत प्रकारकी सिद्धियां प्रगट होती है।

''ज्ञानी पुरुष'' में आत्मशक्ति संपूर्ण व्यक्त हो गई है, उनके निमित्त से दूसरोंकी भी आत्मशक्ति व्यक्त हो जाती है।

द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे, भावसे और भवसे जो सदा अप्रतिबध्ध होकर विचरते है वह ''ज्ञानी पुरुष'' है। ''ज्ञानी पुरुष'' को संसारमें किसी भी चीजका बंधन नहीं।

''ज्ञानी पुरुष'' वह कि निरंतर जिसे आत्मोपयोग रहता है, अंतरंगमें निःस्पृह ऐसे आचरणयुक्त है, अपूर्व वाणी जो कभी न कही, सुनी या पढी हो, फिर भी प्रत्यक्ष अनुभवमें आती है, जिसे न गर्व है, न गारवता है, न अपनापन है, सदा मुक्त हास्यसे सभर जिनका मुखारविंद देदिप्यमान है, ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' स्वयं देहधारी परमात्मा है, मूर्तामूर्त मोक्ष स्वरुप है, मोक्षदाता है, अनेकोंको मोक्ष सुख दिलानेवाले है। धन्य है इस कालको, धन्य है इस भारतके गुजरातकी चरोतर भूमिको और धन्य है उस जननिको, जिसने जगत को आज देहधारी परमात्मा अर्पण किया!!!

''ज्ञानी पुरुष'' के गुणोंका तो कोई भी पूरेपूरा बयान नहीं कर सके। ''ज्ञानी पुरुष'' में १००८ गुण होते है, उनमेंसे मुख्य चार है। सूर्य जैसे प्रतापी और चंद्र जैसे शीतल, दोनो विरोधाभासी गुण ''ज्ञानी पुरुष'' में अेक साथ प्रगट होते है, यह बडा आश्चर्य है। क्यों कि ''ज्ञानी पुरुष'' स्वयं आश्चर्य की प्रतिमा है और उनके पीछे आश्चर्योंकी परंपरा सर्जित होती रहती है, उन परंपराओंका शास्त्रोंमें अंकित होकर हजारों मोक्षार्थी-ओंको पथदर्शक बने रहना यह आश्चर्योंकी परंपराका परमाश्चर्य है।

''ज्ञानी पुरुष'' मेरु समान अडोल

और सागर समान गंभीर होते है। सहज क्षमा, ऋजुता, मृदुता, करुणाका सागर अैसे अनेक गुणों उनमें होते है। उनको कोई गालीगलोच करे, मारपीट करे तो भी उस पर उनकी विशेष करुणा बहती है। क्षमा उन्हे करनी नहीं पडती, सहज क्षमा ही उनकी रहती है।

संसारमें सर्व याचकपनसे मुक्त हुअे है, उसे ज्ञानीपद प्राप्त होता है। ''ज्ञानी पुरुष'' आश्रमका श्रम नहीं करते। मंदिर मठ बांधनेकी भीख उनमें नहीं होती। सामनेवाले प्रति संसारी अपेक्षासे, भौतिककी अपेक्षासे संपूर्ण निःस्पृह और आत्मअपेक्षासे संपूर्ण सस्पृह अैसे सस्पृह-निस्पृह ''ज्ञानी पुरुष'' होते है।

''ज्ञानी पुरुष'' संपूर्ण अपरिग्रही होते है। उनके लक्षमें दुनियाकी कोई चीज रहती ही नहीं। निरंतर जिसका लक्ष आत्मामें ही रहता है, वह परिग्रहके सागरमें रहते हुअे भी अपरिग्रही है। जो तमाम द्वन्द्वोसे—सुख-दुःख, राग-द्वेष, मान-अपमान, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य सब द्वन्द्वोसे पर हो गये है, वह ''ज्ञानी पुरुष'' है। ''ज्ञानी पुरुष'' द्वन्द्वातीत होते है। वह मुनाफेको मुनाफेके रुपसे जानते है, घाटेको घाटेके रुपसे जानते है। मुनाफे घाटाकी उनपर कोई असर नहीं पहूँचती। 'मेरापन' गया उसका संसार अस्त हो गया। अैसी उनकी स्थिति होती है। ''ज्ञानी पुरुष'' संपूर्ण निराग्रही होते है। उनमें किंचित् भी आग्रह नहीं होता तो फिर विग्रह तो उन्हें कहाँ से हो सकता है?

''ज्ञानी पुरुष'' सर्वकाल मुक्तावस्थामें ही होते है। सत्संगमें भी मुक्त और काम धंधे पर भी मुक्त। प्रत्येक अवस्थामें उनको सहज समाधि ही रहती है। ''ज्ञानी पुरुष'' को कोई भय नहीं, क्यों कि वे बिलकुल 'करेक्ट' है, कोई गोलमाल उनमें नहीं होती। ''ज्ञानी पुरुष'' निरंतर वर्तमानमें ही रहते है। काल को उन्होंने बश किया होता है। वर्तमानमें रहनेसे उन्हे जब देखो तब फ्रेश ही दिखते है। भूतकाल और भविष्यकालका सूक्ष्मभेद तो ''ज्ञानी'' के सिवा कोई नहीं कर सकता।

''ज्ञानी पुरुष'' निरंतर 'अप्रयत्न दशा' में ही होते है। उनको भी प्रकृति होती है, लेकिन प्रकृतिका उनपर कोई प्रभूत्व नहीं होता। वे खुदकी संपूर्ण स्वतंत्रतामें रहते है। ''ज्ञानी पुरुष'' की प्रकृति सहज होती है क्यों कि उसमें अहंकारकी दखल नहीं होती! और इसलिए आत्मा भी सहज होता है। ''ज्ञानी पुरुष'' सहजात्म स्वरुप होते है, सहज भावसे निरिच्छक दशामें ही विचरते है। ''ज्ञानी पुरुष'' को किसी चीजकी इच्छा नहीं होती, इसलिए उनका निरंतरायपद होता है।

''ज्ञानी पुरुष'' का व्यवहार आदर्श होता है। किसीको खुदके निमित्तसे जरासी भी तकलिफ वे नहीं पहूँचाते। वे समज पूर्वकके सरल होते है। लोग उन्हें भोले समजते है, लेकिन वे जानबूजकर 'छेतराते' है। उनको जीवनमें किसीसे घर्षण हुआ ही नहीं। क्यों कि उनमें 'कॉमनसेन्स' 'टोप मोस्ट' रहती है। 'कोमनसेन्स' से हित और अहित तुरंत दर्शनमें आ जाता है, और आत्महित अेक क्षण भी बिगडने नहीं देते।

''ज्ञानी पुरुष'' तो संसारमें रहते हुअे भी वीतराग है। ''ज्ञानी पुरुष'' की प्रत्येक क्रिया रागद्वेषरहित होती है और अज्ञानी की रागद्वेषसहित होती है, इतना ही फर्क होता है दोनोमें!

''ज्ञानी पुरुष'' किसी भी तरहसे पहेचाने नहीं जा सकते। मात्र उनकी वीतरागतासे ही वे पहेचाने जाते है। ''अक्रम ज्ञानी'' वीतराग है, लेकिन संपूर्ण वीतराग नहीं। वे 'खटपटवाले' वीतराग है। उनमें अेक खटपट रह गई है कि किस तरह से सबको मोक्ष-सुख दूँ। दूसरेका आत्यंतिक कल्याण करनेके लिए वे सभी खटपट कर लेते है। संपूर्ण वीतराग तो कोई उपर चढे तो उसके प्रति भी वीतराग और नीचे गिरे तो उनके प्रति भी वीतराग और ''अक्रम ज्ञानी'' तो खटपटवाले वीतराग, वे तो नीचे गिरनेवालेको खटपट करके भी उपर उठा लेते है, वो ही अत्यंत करुणा है ''ज्ञानी पुरुष'' की!

''ज्ञानी पुरुष'' का प्रेम वह शुद्ध प्रेम है। अैसा प्रेम वर्ल्डमें कहीं नहीं मिलता। जहां संसारिक कोई स्वार्थ नहीं, केवल आत्मार्थके लिए निरंतर करुणा बरसती है, वहाँ शुद्ध प्रेम-परमात्म प्रेम प्रगट होता है। ''ज्ञानी पुरुष'' को कभी भी किसी के साथ मतभेद नहीं होता। हजारो भीन्नभीन्न प्रकृतियोंसे पाला पडनेके बावजूद भी वे सभीके साथ बिना मतभेद, सबसे अभेदतासे, प्रेम स्वरुपसे रहते है। यह ''ज्ञानी पुरुष'' का बडा अजायब गुण है। उनको गाली देनेवाले से भी वो उतना ही प्यारसे संवारते है जितना फूल चढाने वाले को! उनका प्रेम तो फूल चढावे तो बढता नहीं, और गाली दे तो घटता नहीं, निरंतर अगुरुलघु प्रेम रहता है। घटता-बढता प्रेम वह प्रेम नहीं किन्तु आसक्ति है। ''ज्ञानी पुरुष'' की करुणा विश्व व्याप्त होती है, प्रत्येक जीव पर होती है। वे अनेकोंके आधार होते है, किन्तु खुद किसीका आधार नहीं लेते।

''ज्ञानी पुरुष'' में अपार करुणा होती है, उनमें दया नहीं होती। क्यों कि दया वह अहंकारी गुण है, द्वन्द्व गुण है। दया है तो दुसरी तरफ निर्दयता भरी होती ही है, ''ज्ञानी पुरुष'' द्वन्द्वातीत होते है। करुणा सब पे समान कारुण्य भाव! चूहे पर भी करुणा और उसे मारनेवाली बिल्ली पर भी उतनी ही करुणा।

''ज्ञानी पुरुष'' को त्यागात्याग-त्याग या अत्याग करनेका नहीं रहता, वे तो सहज भावमें रहते है, उदयाधीन उनका वर्तन होता है। रागद्वेषसे पर अैसी वीतरागता उनकी विशेष लाक्षणिकता है।

''ज्ञानी पुरुष'' कोई 'स्टान्डर्ड' में नहीं, 'आउट ओफ स्टान्डर्ड' पूर्ण दशामें है। इसलिए उन्हे माला फेरनी नहीं पडती, पुस्तक पढनेकी जरुरत नहीं, जो 'फिफ्थ' या 'सिक्स्थ' 'स्टान्डर्ड' में है, वे माला फिराते है, पुस्तक पढते है।

''ज्ञानी पुरुष'' को पहचानना बहुत मुश्किल है। उन्हें न तो गेरुअे वस्त्र है, न सफेद 'बोर्ड' है। उन्हे तो जिस लिबासमें 'ज्ञान' प्रगट हुआ हो वही लिबास रहता है, वह फिर धोती, कुर्ता और काली टोपी क्यों न हो!! ''ज्ञानी पुरुष'' को पहचान लिया तो चौदह लोकके नाथकी पहचान हो जाती है। क्यों कि चौदह लोकका नाथ उनमें प्रगट हो गया है। ''ज्ञानी पुरुष'' घर संसारमें रहते हुअे भी गृहस्थी नहीं होते। सच्चा मुमुक्षु तो ''ज्ञानी पुरुष'' के नेत्रको देखते ही, आंखोंमें वीतरागता देखते ही उन्हें पहचान लेता है। यदि यह द्रष्टि नहीं खुली, तो उनकी वाणीसे उनकी पहचान हो सकती है। ''ज्ञानी'' की वाणी स्याद्वाद वाणी होती है। वह कीसी भी नयका प्रमाण खंडित नहीं करती। शिव, वैष्णव, मुस्लिम, दिगंबरी, श्वेतांबरी, कोई भी पक्षवाले को ''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी खुदकी ही वाणी लगती है।

''ज्ञानी पुरुष'' के श्रीमुखसे निकले हुए शब्द, अेक अेक शब्द नये शास्त्रोंकी रचना कर देते है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुरुप नीकली हुई उनकी वाणी संपूर्ण निमित्ताधीन नीकलती है, जिसके निमित्तसे 'डिरेक्ट' निकली, उसके तो सर्व आवरण भेद हो जाते है, इतना ही नहीं, जो दूर बैठा सूनता है, या पुस्तक द्वारा पढता है, उसका भी काम हो जाता है क्यों कि यह ''ज्ञानी पुरुष'' आज प्रगट है, प्रत्यक्ष है, हाजीर है।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणीको प्रत्यक्ष सरस्वती कही जाती है। क्यों कि उनके भीतरके प्रगट परमात्मा को स्पर्श करके यह वाणी निकलती है। जो श्रोताके सर्व आवरणको भेदकर direct आत्माको स्पर्श करती है और ज्ञान-प्रकाश प्रगट करती है। यह चैतन्य वाणी सूननेवालोंके अनंत अवतारके पापोंको भस्मीभूत करती है। यह वीतराग वाणी होती है, और वीतराग वाणी ही मोक्षमें ले जाती है।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी अपूर्व होती है, पूर्वानुपूर्वीकी नहीं। उनके मुखसे नीकला हुआ सीधा सादा घरेलु दृष्टांत अैसी दृष्टिसे देखकर बयान किया जाता है कि श्रोताका हृदय 'मेरे स्वानुभवकी ही बात है' कह कर नाच उठता है। उनकी गहनसे गहन बात बिलकुल सादे, सीधे, सबके अनुभवके दृष्टांतोंसे मर्मस्थानको ही सुस्पष्ट करती है। वे सादी सरल गांवठी भाषामें घरेलू बातोंसे लेकर तत्त्वज्ञानकी गहन बातोंका विस्फोट करते है। बडेबडे तत्त्वज्ञानी या पंडितोंसे लेकर भोली भाली अनपढ बुढिया भी गहनसे गहन बात अति अति सरलतासे समज जाती है। उनकी बात समझानेकी शैलि और उनके प्रत्येक दृष्टांतादि मौलिक होते है।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी हित, मित, प्रीय और सत्य होती है। वे हमेशा सामनेवालेके आत्महितमें ही बोलते है, खुदके लाभकी कभी दृष्टि ही नहीं होती। ''ज्ञानी पुरुष'' में खुदपन होता ही नहीं, और इसलिए उनकी वाणी सामनेवालेके साथके व्यवहारके अनुसार नीकलती है। जैसा जिसका व्यवहार, वैसी वाणीका उदय। जिसे कीसीके भी साथ रागद्वेष नहीं, कीसी भी प्रकारकी कोई कामना नहीं, कोई ईच्छा नहीं, ऐसे वीतराग पुरुषकी वाणी सामनेवालेके दर्दके अनुसार नीकलती है। यदि वह पुण्यात्मा हो और रोग खत्म होने पर आया हो तो ''ज्ञानी पुरुष'' के कठोर शब्द निकलकर उसके रोग को खत्म कर देते है। उनको किसी भी चीजकी अपेक्षा नहीं, किसीसे कोई 'घाट' नहीं, इसलिए वह नीडरतासे सामनेवाले के आत्महितको लक्षमें ही रखकर स्पष्ट नग्न सत्य कह देते है, क्यों कि उनमें अपार करुणा होती है।

''ज्ञानी पुरुष'' का अेक वाक्य अगर सीधा भीतरमें उतर गया तो वह मोक्षमें ले जाय अैसा होता है। ''ज्ञानी पुरुष'' तो सीधा मोक्षमार्ग ही बता देते है, फिर शास्त्रोंको पढनेकी जरुरत ही नहीं। ''ज्ञानी पुरुष'' के शब्दमें किंचित ही खुद बुध्धि चलानेमें बहुत बडा धोखा है। और अेक ही शब्द जैसा का वैसा ही पच गया तो वह शब्द ही उसे मोक्षमें ले जायेगा।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी सामनेवालेके पुण्य के आधिन नीकलती है। वे 'खुद' तो बोलते ही नहीं। वे तो सिर्फ 'देखते' है कि कैसी वाणी नीकलती है, और सामनेवालेका पुण्य कितना है। हरेक धर्मका, किसी भी प्रश्नका वे समाधान कर सकते है। ''ज्ञानी पुरुष'' की 'टेप रेकर्ड' सारे दिन चलती है फिर भी भगवानने उन्हें मुनि कहा। स्व-परके आत्मार्थ सिवा अन्य कोई भी हेतु जिस

बाणीमें नहीं, वह बाणी सारा दिन बोली जाय तो भी वे मुनि, नहीं, महामुनि है। इसे परमार्थ मौन कहते है। बाकी भीतरमें क्लेश, मनदुःख, और बाहरमें मौन, उसे सच्चा मुनि कौन कहेगा ?

''ज्ञानी पुरुष'' संयमी होते है। जब बाणी वर्तन संयमित होता है तब व्यवहार पूर्ण होता है। उनके बाणी वर्तन और विनय मनोहर होते है। ''ज्ञानी पुरुष'' की बात हमारा आत्मा ही कबुल कर लेता है। क्यों कि हमारे अंदर वेही बैठे हुअे है, उनको कोई भेद नहीं होता, यदि हम जान बुझकर टेढाई न करें तो !

''ज्ञानी पुरुष'' श्रध्धाकी परम मूर्ति है, याने उनको मात्र देखते ही श्रध्धा आ जाती है। उनके पास श्रद्धा रखनी पडती नहीं, स्वयं आ जाती है। अैसी श्रध्धाकी मूर्ति कोई कालमें नहीं होती, आज है तो उनका अनुसंधान करके 'काम' निकाल लेना चाहिए।

''ज्ञानी पुरुष'' तो आप्तपुरुष है याने मोक्षमार्गमें और संसार व्यवहारमें पूर्ण तौरसे विश्वा सनीय, श्रध्धेय ! प्रगट पुरुषका ही माहत्म्य है, कि उनके दर्शनसे ही आत्मशक्ति प्रगट होती है।

''ज्ञानी पुरुष'' लघुतम-गुरुतम भावमें होते है। 'रीलेटीव' में लघुतम भावमें, 'रीयल' में गुरुतम भावमें और 'स्वभाव से अभेद भावमें होते है। किसीको मोक्ष चाहिए तो वहाँ गुरुतम, कोई गाली दे, मारे तो वहाँ लघुतम भावमें होते है।

प्रत्येक जीवका शिष्यपद ग्रहण करनेकी दष्टि जिसने पाई है, वही ''ज्ञानी'' हो सकता है। ''ज्ञानी पुरुष'' तो विश्वके सेवक और सेव्य दोनों होते है। जगतकी सेवा भी खुद लेते है और जगतको सेवा भी खुद देते है।

जब तक आत्मज्ञानी नहीं मिलते तब तक प्रभुके पास भक्ति मांगनी चाहिए और ''ज्ञानी पुरुष'' मिले तो उनके पास मोक्ष मांगना। ''ज्ञानी पुरुष'' को भक्ति की जरुरत ही नहीं, लेकिन उनका ज्ञान प्राप्त करनेके लिए मुमुक्षुको ''ज्ञानी पुरुष'' की भक्ति करना आवश्यक है। और ''ज्ञानी पुरुष'' के पास तो उनकी भक्ति नहीं होती बल्कि अपने ही आत्माकी भक्ति होती है। उनकी आरती, चरणविधि याने अपने आपकी ही आरती और चरणविधि होती है। ''ज्ञानी पुरुष'' के पास तो खुदको खुदके दर्शन करनेके होते है। जहां चेतन प्रगट हुआ है, ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' की भक्तिसे चेतन प्रगट होता है, उनकी आराधना करना याने शुध्धात्माकी आराधना करनेके बराबर है, परमात्माकी आराधना करने बराबर है और वही मोक्षका कारण है। ''ज्ञानी पुरुष'' की भक्तिमें कीर्तन भक्ति करना, यह तो सर्वश्रेष्ठ भक्ति है।

''ज्ञानी पुरुष'' अमूर्त भगवानके दर्शन कराते है, तत्पश्चात मूर्तिके दर्शनकी आवश्यकता नहीं रहती। अमूर्तकी भजनासे मोक्ष मिलता है और मूर्तकी भजनासे संसार। ''ज्ञानी पुरुष'' मूर्तामूर्त है, मूर्त और अमूर्त दोनों स्वरुपसे होते है, उनकी भजनासे संसारमें अभ्युदय और अध्यात्ममें आनुषंगिक, दोनों फल मिलते है। संसारमें विघ्न नहीं आते, शांति रहती है और मोक्ष प्राप्ति भी होती है।

''ज्ञानी पुरुष'' धर्म व्यवहारमें भी संपूर्ण होते है। निरंतर अमूर्तमें रहते है, अमूर्तके निरंतर दर्शन करते है, फिर भी मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वार, देरासर माता-जीके मंदिरमें, शिवके मंदिरमें आदि सभी

जगह वे जाते है। ताकि लोंगोके लिए बादमें यह व्यवहार चालू रहे। अमूर्तके दर्शन अभी हुअे नहीं और मूर्तिके दर्शन क्या करना, अैसा तिरस्कार भाव जनतामें जाग न जाय इसलिए वे मिसाल देते है।

''ज्ञानी पुरुष'' का संग याने सत्का संग-परम सत्संग, उसे परमहंसकी सभा कहते है। जहां ज्ञान और अज्ञानका विभाजन किया जाता है वह परमहंस। और जहां धर्मकी बातें होती है वह हंसकी सभा है। और जहाँ वाद-विवाद हो, किसीकी सच्ची बात भी सुननेकी तयारी नहीं, वह कौअेकी सभा है। ''ज्ञानी पुरुष'' के पास तो जो चीज चाहिए वह मिल सकती है। मोक्ष मांगे तो मोक्ष भी मिल सकता है, क्योंकि वे मोक्षदाता पुरुष होते है। शास्त्रकारोंने इसलिए ''ज्ञानी पुरुष'' को देहधारी परमात्मा कहा है। वहाँ संपूर्ण 'काम' निकल जायेगा।

''आत्मा'' जानने जैसा है और उसे जाननेके लिए ''ज्ञानी पुरुष'' के पास ही आना पडेगा। शास्त्रका या पुस्तकका आत्मा नहीं चलेगा। पुस्तकमें लाख 'दिये' छपे हो लेकिन वे अंधेरेमें प्रकाश देंगे?! नहीं, प्रत्यक्ष दिया ही रोशनी देता है। ''ज्ञानी पुरुष'' प्रत्यक्ष 'दिया' है, 'प्रत्यक्ष' से ही अपना 'दिया' प्रगट हो सकेगा।

समस्त विश्वके कल्याणके ''ज्ञानी पुरुष'' निमित्त होते है, कर्ता नहीं। वो चाहे सो दे सकते है क्यों कि उनमें किंचित् भी कर्ता भाव नहीं होता। जहाँ तक कर्ताभाव है वहाँ तक पुद्गलका फल मिलता है, वहाँ आत्मा प्राप्त नहीं होता।

''ज्ञानी पुरुष'' कर्तापदमें नहीं होते, उन्हें उपाय करनेका या न करनेका अहंकार नहीं होता। सहज भावसे उनके उपाय हो जाते है, 'निरुपाय-उपाय' उनका होता है, क्यों कि वे खुद 'उपेयभाव' में रहते है, इसलिए उन्हें उपाय करनेका नहीं होता। और जब उपाय करनेका शेष नहीं रहेता, तब 'उपेय' प्राप्त होता है। ''ज्ञानी पुरुष'' सकाम कर्म भी नहीं करते और निष्काम कर्म भी नहीं करते। दोनोमें बंधन ही है। जहाँ कुछ भी 'करनेका' भाव है, वहाँ बंधन ही है।

जगत जहाँ प्रवृत्त, ज्ञानी वहाँ निवृत्त। ज्ञानी जहाँ प्रवृत्त जगत वहाँ निवृत्त। जगतकी प्रवृत्ति प्रकृतिके अधिन है। 'डिस्चार्ज' में ''ज्ञानी पुरुष'' हस्तक्षेप नहीं करते, 'डिस्चार्ज' में हस्तक्षेप करनेसे कर्म 'चार्ज' होते है। ''ज्ञानी पुरुष'' के प्रत्येक कर्म दिव्य कर्म होते है। जो भीतरसे निरंतर जागृत है, अपने प्रत्येक कर्मको क्षय करके आगे बढ चूके है, जो क्षायक स्थितिमें है, उनके पास कोई बुध्धि चलानेवाला, उनके कर्मका दोष देखनेवाला मारा जायेगा। ''ज्ञानी पुरुष'' तो अेक क्षण भी परपरिणतिमें नहीं ठहरते। नाटक की तरह 'रोल' अदा करके आगे बढ जाते है। जो स्वयं अबुध है वहाँ बुध्धि क्या चलानेकी!

''ज्ञानी पुरुष'' निर्विकल्प, संपूर्ण निर्मोही और निर्ग्रंथ होते है। अेक क्षण भी उनका उपयोग कीसीमें अटकता नहीं, निरंतर शुध्ध उपयोग ही रहता है। ''ज्ञानी पुरुष'' में अेक भी मनोग्रंथी नहीं होती। उनको खुदका मन वशमें रहता है।

''ज्ञानी पुरुष'' विश्वमें एकमेव मनके डॉक्टर होते है, वे मनके सारे रोग मिटा देते है, नया रोग नहीं होने देते, इतनाही नहीं, वह मन और आत्माको भिन्न करा सकते है। तत् पश्चात् मन संपूर्ण काबुमें रहने लगता है।

''ज्ञानी पुरुष'' में बुध्धिका अंश

भी नहीं होता; उनमें बुध्धि संपूर्ण प्रकाशमान हो चूकी होती है, लेकिन ज्ञान प्रकाश प्रगट होनेसे बुध्धिका प्रकाश एक कोनेमें ही पडा रहता है। सूर्य नारायणके आगमनसे दियेके प्रकाशकी कैसी हालत होती है?! आत्मानुभवी ज्ञानी पुरुष अबुध होते है, वे विश्वमें अद्वितिय होते है। शास्त्रज्ञानी बुध्धिसे पर नहीं होते। अेक ओर अबुध दशा आती है तो दूसरी ओर सर्वज्ञ दशा आती है। मगर यह 'कारण सर्वज्ञ' दशा है, 'कार्य-सर्वज्ञ' दशा इस कालमें इस क्षेत्रमें नहीं हो सकती, अैसा शास्त्रप्रमाण है।

''ज्ञानी पुरुष'' में बुध्धि ही नहीं, फिर भी जरासी है। क्यों कि संपूर्ण ३६० डीग्री की बुध्धि खत्म हो जाती तो आज यह 'अे. अेम. पटेल' भी 'महावीर' कहे जाते। लेकिन चार डिग्री बाकी है इसलिए उतना अंतर रह गया।

''ज्ञानी पुरुष'' का चित्त निरंतर आत्मामें ही रहता है। जैसा फणीधर मुरलीके सामने डोलता है, फिर अेक क्षण भी व्यग्रता कैसे हो सकती है? और इस संसारकी कोई भी चीज उनके चित्तको आकर्षण कर सकती नहीं, अैसे महामुक्त दशामें ''ज्ञानी पुरुष'' विचरते है।

''ज्ञानी पुरुष'' अहंकार रहीत होते है, विश्वमें उनके सिवाय अन्य कोई निर् अहंकारी नहीं हो सकता। ''ज्ञानी पुरुष'' में अहंकार का अस्तित्व ही नहीं होता। इसलिए दुःख परिणामका उन्हें वेदन नहीं होता।

यह बोल रहे है, वह कौन बोलते है? ''दादा भगवान''? ''ज्ञानी पुरुष''? जी नहीं। वह तो 'टेप रेकर्ड' बोल रही है। 'ओरिजिनल टेप रेकर्ड' वोही वक्ता है, 'ज्ञानी पुरुष' तो उसके ज्ञाता-द्रष्टा है और सबलोग श्रोता है। ''ज्ञानी पुरुष'' तो सिर्फ 'देख' रहे है कि यह 'टेप रेकर्ड' कैसी बजती है, उसमें कितनी गलतियाँ है। जीव मात्र बोलते है, वह 'टेप रेकर्ड' ही है, फर्क सिर्फ इतना है कि सब लोग अहंकार करते है कि मैं बोलता हूँ और ''ज्ञानी पुरुष'' में अहंकार नहीं होता, इसलिए वे जैसा है वैसा स्पष्ट कह देते है कि यह tape record बोलती है।

केवल ज्ञानमें 'वे' चार डीग्रीसे नापास हुअे है, वरना वे यहाँ सब लोगोंके बीच नहीं होते, वे कबके मोक्षमें जा पहूँचे होते। यह तो नापास हुअे तो कलिकालमें पुण्यात्माओंके उध्धारके लिए काम आ गये। चार डीग्री कम है, इसलिए स्थूल और सूक्ष्म दोष तो संपूर्ण नष्ट हो गये है, सिर्फ सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष उनमें रहे है, जो अन्य किसीको किंचित् हरकत नहीं करते, वह तो उनके 'केवल ज्ञान' प्रगट होनेमें आवरण करता है, जिसे वे भली भांति जानते है। सर्व दोष जिनके क्षय हुअे है ऐसी ''ज्ञानी'' की निर्दोष भूमिकाको क्या कहना!!

''ज्ञानी पुरुष'' को भी प्रतिक्रमण करने पडते है, लेकिन यह प्रतिक्रमण सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोषोंके होते है। शुद्ध उपयोग चूकने पर तुर्त वे प्रतिकमण कर लेते है। स्वयं निर्दोष होकर सारे जगत को निर्दोष देखनेकी दृष्टि पाकर ''ज्ञानी'' सारे जगत को निदोष देखते है, प्रत्येक जीवको व्यवहारसे भी वे निर्दोष देखते है। निरंतर अकर्तापदमें स्थित ''ज्ञानी'' अन्यको तत्त्वद्रष्टिसे देखते है, याने अन्यको भी अकर्ता देखते है, फिर कौन दोष करनेवाला दिखेगा?

अनंत अवतारसे जिस पूर्ण पुरुषोत्तमको वे ढूंढते रहे, वह इस अवतारमें उनके ही देहमें प्रगट हो गये। अज्ञानीको जरासी

सत्ता मिली तो वह उन्मत्त हो जाता है। ''ज्ञानी पुरुष'' को सारे ब्रह्मांडका साम्राज्य मिलने पर भी जरा भी उन्मत्त नहीं होते। इसीलिए श्रीमद् रामचंद्रजीने ''ज्ञानी पुरुष'' को देहधारी परमात्मा कहा है। दूसरे ओर किसी परमात्माको ढूंढने जानेकी जरूरत ही नहीं है। अैसे ''ज्ञानी पुरुष'' के बिना किसीका देहाध्यास नहीं जा सकता।

''ज्ञानी पुरुष'' विज्ञानघन आत्मामें, याने 'अेब्सोल्युट' आत्मामें स्थित है। याने अंतमें तो ''ज्ञानी पुरुष'' भी साधन स्वरुप है, साध्य तो ''विज्ञान स्वरुप आत्मा'' है।

''आत्मा'' विज्ञान स्वरुप है, ज्ञान स्वरुप नहीं, ज्ञानमें करना पडता है, विज्ञान तो स्वयं क्रियाकारी है, विज्ञान सिध्धांतिक होता है, अविरोधाभास होता है। धर्म और विज्ञानमें बडा अंतर होता है। धर्मसे संसारके भौतिक सुख मिलते है, पुण्य बंधाता है और विज्ञानसे मोक्ष होता है। विज्ञान है वहाँ पुण्य नहीं, पाप नहीं, कर्मबंध भी नहीं, कर्मोंकी सिर्फ निर्जरा है, संवर सहित। विज्ञानमें कुछ छोडनेका नहीं होता, विज्ञानमें तो 'खुद' ही जूदा हो जानेका है। 'खुद' जूदा हो गया उसका पझल सोल्व हो गया।

श्रीकृष्ण भगवानने कहा है की ''ज्ञानी पुरुष'' में वह सामर्थ्य है कि दूसरों के सब पापोंको अेक साथ भस्मीभूत कर सकते है, क्यों कि जो भी कोई अेक क्षण भी देह में नहीं रहते, मनमें नहीं रहते, वाणीमें नहीं रहते, वही पापों को नाश कर सकते है। इतना ही नहीं, बल्कि निजस्वरुपका ज्ञान प्रदान करते है और दिव्यचक्षु देते है, जिससे हर घट में आत्मदर्शन होते है, 'आत्मवत् सर्व भूतेषु'। और एक घंटे में ही इतनी बडी प्राप्ति करानेवाले अक्रम मार्ग के ''ज्ञानी'' तो 'न भूतो न भविष्यति' है।

''ज्ञानी पुरुष'' के पाससे आत्माकी अनुभूति हो जानेके बाद आत्मा निरंतर लक्षमें रहता है। मन, वचन, कायाकी सारी क्रियाएँ होती रहती है, किन्तु उसमें 'खुद' कर्ता नहीं है, इतना ही नहीं कौन इसका कर्ता है उसकी स्पष्ट जागृति रहती है। फिर चिंता कभी नहीं होती, संसारी दुखोंका अभाव रहता है।

क्रोडो जन्मोका पुण्य प्रकट होता है तब ''ज्ञानी पुरुष''का दर्शन होते है, और सिर्फ दर्शनसे तृप्त न होते ''ज्ञानी पुरुष ने जो 'वस्तु' पाई है, वह 'वस्तु' 'खुद' को भी प्राप्त हो जाय, वह दर्शनमें आजाय तो फिर जनमजनम के फेरेका अंत आता है। ''ज्ञानी पुरुष'' की कृपासे स्वरुपका ज्ञान हो जाता है, तथा आत्म-जागृति प्रकट हो जाती है। तत्पश्चात खुदके सारे दोष देख सकता है और जो दोष देखे कि वे सब अवश्य क्षय होते है।

''अक्रम ज्ञान'' प्राप्त करनेके बाद आर्तध्यान, रौद्रध्यान बिलकुल नहीं होते। आर्तध्यान, रौद्रध्यान तब ही हो जाते है, जब निजस्वरुपका ज्ञान, भान नहीं होता। निजस्वरुपकी जागृति रहनेसे आर्तध्यान, रौद्रध्यान नहीं होते, निरंतर अंदर शुक्लध्यान और बाहर व्यवहारमें धर्मध्यान रहता है। शुक्लध्यान ही प्रत्यक्ष मोक्षका कारण है। जहाँ तक अपने आत्माका स्पष्ट अनुभव नहीं होता, वहाँ तक ''ज्ञानी पुरुष'' ही अपना आत्मा है। 'अक्रम मार्ग' पूरा समज लेनेकी जरुर है, क्यों कि यह विज्ञान है, उसे वैज्ञानिक ढबसे समज लेना जरुरी है। ''ज्ञानी'' के सान्निध्यमें उनको पूछ पूछकर 'समज' पूरी तरह 'फीट' कर लेनी चाहिए।

''ज्ञानी पुरुष'' के पास 'करने' का कुछ नहीं होता, बातको सिर्फ समजनेकी ही

है। वस्तुको यथार्थ समजनेसे सम्यक् दर्शन होता है और यथार्थ जानने से सम्यक् ज्ञान होता है। जो जान गया और समज गया उससे सम्यक् चारित्र होता है।

भगवानने कहा है कि मोक्ष प्राप्त करनेके लिए कुछ 'करने' की आवश्यकता नहीं है, उसके लिए तो ''ज्ञानी पुरुष'' के पीछे पीछे चले जाना। उनका साथ कभी नहीं छोडना।

मोक्ष याने मुक्तभाव, सच्ची आझादी -कोई ऊपरी नहीं, कोई 'अंडरहेन्ड' भी नहीं। ऐसा मोक्ष संसारमें रहते हुअे भी प्राप्त करके संपूज्य श्री 'दादाश्री' गृहस्थिओंके लिए अेक मिसाल बन चूके है ताकि गृहस्थिओंको भी हिंमत रहे कि हम भी मोक्ष पा सकते है। और मोक्षके लिए संसार त्यागकी जरुरत नहीं, मगर अज्ञान दूर हो गया तो संसारमें मोक्ष सहज प्राप्त हो जाता है। मोक्ष सुलभ है, किन्तु मोक्षदाता अति अति दुर्लभ है, क्यों कि मोक्षदाता अैसे ''ज्ञानी पुरुष'' वर्ल्डमें कभी ही प्रगट होते है। यदि अैसे पुरुष मिल जाय तो उनके चरणमें सर्व भाव अर्पण करके उनके पीछे पीछे चले जाना ही हितकारी है। ''ज्ञानी पुरुष'' के सिवा दुनियामें दुसरी कोई भी चीज हितकारी नहीं होती। उनके पास माया कायमकी बिदा लेती है। संसारकी माया जालसे सिर्फ ''ज्ञानी पुरुष'' ही छूडा सकते है। जो खुद मुक्त है, वही दूसरोंको बंधनसे छूडा सकते है। खुद बंधनमें फसा है, वह दूसरोंको कैसे छूडा सकेगा ?

जिसे सिर्फ मोक्षकी ही एकमेव कामना है उसे तो किसी न किसी तरह मोक्ष मिले बीना नहीं रहता। अरे, ''ज्ञानी पुरुष'' खुद उसके घर जाकर उसके हाथमें मोक्ष देते है। इतना प्रभाव अपनी मोक्षकी तीव्र कामनामें है।

''ज्ञानी पुरुष'' मिलनके बाद कुछ भी महेनत करनी नहीं पडती। महेनतका फल संसार है, मोक्ष नहीं। यदि ''ज्ञानी'' के मिलनेके बाद कुछ महेनत करनी पडे तो ''ज्ञानी'' ही नहीं मिले !! ''ज्ञानी'' मिलने पर तो ज्ञानीको कहना कि आपके मिलने के बाद अब महेनत क्या करनी ? महेनत करके तो अनंत अवतार गये, कुछ फल नहीं आया। आपकी शरणागति स्वीकार की है, आप हमे बंधनसे मुक्ति दो।

ज्ञानी मिले बिना किसीका मोक्ष होना संभवित नहीं है, प्रगट दियेसे ही दूसरा दिया जलता है। ''ज्ञानी पुरुष'' अहंकार-ममताको छूडाते है और शुध्धात्माको ग्रहण कराते है,. उनके चरणोंमें अहंकार पिघलानेका सामर्थ्य होता है।

''ज्ञानी पुरुष'' स्वयं शुद्ध होते है, इसलिए उनको देखते ही शुद्ध हो जाते है। नहीं तो 'ज्ञानी पुरुष' बिन 'खुद' की 'जात' मिले अैसी नहीं है, अरे, अनंत अवतार जाये तो भी न मिले ऐसा है और ''ज्ञानी पुरुष'' मिलते ही मिल जाय अैसी है।

निजस्वरुपकी भ्रांति कोई भी उपायसे जाती नहीं। वह तो ''ज्ञानी पुरुष'' ही भ्रांति दूर कर सकते है। इसलिए श्रीमद् राजचंद्रजीने कहा कि प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष की तलाश करो, सजीवन मूर्तिकी तलाश करो। जो स्वयं मुक्त हुअे है, अैसे मुक्त पुरुषकी तलाश करना। ''ज्ञानी पुरुष'' तरण तारणहार होते है, वे खुद तो तैर गये किन्तु अनेकोंको तारनेका सामर्थ्य उनमें होता है, अैसे ''ज्ञानी पुरुष'' मिले तो उनके कदमोंके पीछे पीछे निर्भय निःशंक हो कर चले जाना। ज्ञान ''ज्ञानी पुरुष '' के

हृदय में ही होता है और कहीं नहीं! ''ज्ञानी पुरुष'' के पाससे ज्ञान प्राप्ति हुई तो ही काम बनेगा। और ''ज्ञानी'' का आश्रित ही स्वच्छंद नामका संसार-रोग निर्मूल कर सकता है। ''ज्ञानी पुरुष'' के आश्रय बिना, उनकी आज्ञानुसार चले बिना, जो कुछ भी किया, तप, त्याग, क्रिया या शास्त्र पठन क्रिया वह सब स्वच्छंद है और स्वच्छंद से की गई तमाम क्रिया बंधनमें डालती है।

लौकिक में शास्त्रके ज्ञानी को ''ज्ञानी'' कहते है, असलमें तो ''ज्ञानी'' वही होता है कि जो आत्मज्ञानी हो, वे ज्ञानावतार होते है और ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' कभी गुप्त नहीं रहते। वे तो आम जनताके बीचमें ही पर्यटन करते रहते है, खुदको जो ज्ञान प्रगट हुआ है, खुदने जिन सुखको पाया है, वही ज्ञान, वही सुख दूसरोंको लूटाते फिरते है। पूर्ण दशामें पहुँचे हुअे ''ज्ञानी'' पब्लिकमें लोककल्याण करते हुअे विचरते है।

संपूज्य श्री दादाश्री कहते है कि, हमारी यही भावना है कि यह ''अक्रम विज्ञान'' विश्वमें फैलना चाहिए, अक्रम विज्ञानका लाभ लोगोंको अवश्य मिलना चाहिए, जगतका कल्याण होना ही चाहिए, जगतमें परम शांति प्रसरो।

संसारमें अभीवृद्धि, सच्चा मार्ग बतलानेके लिए गुरु करना आवश्यक है। गुरु सांसारिक सर्व धर्म शीखाता है। लेकिन संसारसे वे मुक्ति नहीं दिलवा पाते। संसारसे मुक्ति तो सिर्फ ''ज्ञानी पुरुष'' ही दे सकता है। गुरु संसार व्यवहारपक्षी होते है और ''ज्ञानी पुरुष'' आत्मपक्षी होते है, व्यवहारमें गुरु और निश्चयमें ''ज्ञानी''! ''ज्ञानी'' मिलने पर भी पहलेके व्यवहारके गुरु पर अभाव करनेका नहीं। उनका उपकार मानना।

मंझिल पानेको तो मार्गमें भटकते हुअे पथिकको तो किसीको रास्ता पूछना ही पडता है, किसीको गुरु बनाना ही पडता है। अरे, स्टेशनका रास्ता नहीं मालूम उसे किसीको रास्ता पूछना ही पडता है। तो फिर यह तो मोक्षकी गली, छोटीसी, भूलभूला-वेवाली! ईस मोक्षपथ पर तो ''ज्ञानी पुरुष'' ढूंढकर उनके पीछे पीछे चले जाना। ''ज्ञानी पुरुष'' मोक्ष देनेके 'लायसन्सदार' होते है, अपनी तैयारी चाहिए। ''ज्ञानी पुरुष'' के पास सिर्फ दो चीजोंकी आवश्यकता है, ''परम विनय'' और ''मैं कुछ नहीं जानता हूँ'' अैसा भाव। सच्चा जाना तो उसे कहा जाता है कि जीसके पश्चात् ठोकर नहीं लगती। यदि ठोकर लगती है, चिंता, क्लेश, अशांति रहती है तो फिर उसे 'मैं कुछ जानता हूँ' किस तरह से कहा जाय?!

'यह' तो विश्वकी आध्यत्ममें नगद बैंक है। अेक घंटेमें ही 'डीवाईन सोल्युशन' मिल जाता है। बाकी उधार कहाँ तक चलेगा? अनंत अवतारसे उधारी बेंकमें ही हप्ते भरे है, नगद मिले तो काम बने!

विश्वके लोग 'थीयरी ऑफ रीलेटिविटी' में है जीन्हें 'रीयल' और 'रीलेटिव' का भेदज्ञान प्राप्त हो चूका है वे 'महात्मा' 'थीयरी ऑफ रीयालीटी' में है और ''ज्ञानी'' स्वयं 'थीयरी ऑफ 'अेब्सोल्युटिझम' में है। 'थीयरी' ही नहीं बल्की वे तो 'अेब्सोल्युटिझम के थीयरममें' होते है। जर्मनीवाले हमारे भारतीय शास्त्रोंको 'अेब्सोल्युटिझमकी खोज करनेके लिए ले गये है। आज ''ज्ञानी पुरुष'' खुद 'अेब्सोल्युट' प्रगट हुअे है। सारे विश्वके लोगों की खोजका अंत उनके पाससे ही आ जाता है।

''ज्ञानी पुरुष'' 'थीयरी ओफ रीलेटिविटी' में से 'थीयरी ऑफ रीयालिटी' में ला सकते है। उस के बाद ही 'रीयल' धर्म, आत्मधर्मका-स्वधर्मका पालन होता है। जब तक आत्माका अेक भी गुण जाना नहीं, तब तक आत्मधर्म कैसे पाला जाता ?! तब तक सभी परधर्म में ही है।

ज्ञानको ज्ञानमें और अज्ञानको अज्ञानमें बिठाना उसका नाम यथार्थ दीक्षा। अैसी दीक्षा ''ज्ञानी पुरुष'' के अलावा कौन दे सकता है ? जगतका स्वभाव अज्ञान प्रज्ञान करना है और ''ज्ञानी पुरुष''का स्वभाव ज्ञान प्रदान करना है। अज्ञान भी निमित्तसे ही मिलता है और ज्ञान भी निमित्त के बिना नहीं मिलता। ''ज्ञानी पुरुष'' जब आत्मज्ञान का प्रदान करते है तब आत्मा-अनात्मा के सारे गुणधर्म को स्पष्ट करके उन दोनों के बीच 'लाईन ऑफ डीमार्केशन' डाल देते है। उसके बाद आत्मधारा, अनात्मधारा निरंतर अलग अलग ही रहती है।

संसार को जडमूलसे निर्मूल करने बहुत बहुत विरल पुरुष अनंत अवतारसे मथ रहे है। कोई इस वृक्षके पत्तों को काटा करते है, तो कोई उसकी डालियों को, कोई उसके मुख्य थड को काट रखते है। फिर भी वह वृक्ष निर्मूल नहीं होता। ''ज्ञानी पुरुष'' संसारवृक्षके घोरीमूल-मेईनरूट' को भली तरह से पहचानते है। इसलिए वह उसमें ही दवा रख देते है। जिससे पेडके कोई भी हिस्सेको हिलाये बिना खुद ब खुद पेड खत्म हो जाता है। यह ''अक्रम विज्ञान'' की बहुत बडी देन है, नहीं तो अेक घंटेमें मोक्ष, अेकावतारी पद कैसे प्राप्त हो सकता है ?!!

संसारके तमाम धर्म शास्त्रोंको पढकर १००% धर्म धारण करनेके बाद धर्मका मर्म नीकलना शुरु हो जाता है। १००% मर्म समजमें आनेके बाद ज्ञानार्क नीकलनेकी शुरुआत होती है। 'अक्रम मार्ग' के ''ज्ञानी पुरुष'' अेक घंटेमें ज्ञानार्क पीला देते है।

मोक्षमें जानेके लिए दो मार्ग है। अेक क्रमिक्र, दूसरा अक्रमिक ! क्रमिक यह आम रस्ता है, हमेशा का मार्ग है। उसमें साधक को 'स्टेप बाय स्टेप' आगे बढने का रहता है। कोई सच्चा साथी मिल गया तो पांचसो 'स्टेप्स' चढा देता है और कुसंग मिल गया तो पांच हजार 'स्टेप्स' उतार देता है। इसलिए इस मार्गका भरोसा नहीं है। फिर भी आमतौर पर यही मार्ग हमेशा होता है। अक्रम मार्ग तो कभी ही होता है, जो अपवाद मार्ग है। इसमें स्टेप्स नहीं चढनके ; 'लिफ्ट' में सीधा, बिना श्रमसे उपर चढनेका है। सिर्फ ''ज्ञानी'' की आज्ञा के अनुसार 'लिफ्ट' में बैठनेका है। ''ज्ञानी पुरुष'' अेक घंटेमें आत्मज्ञान कराते है और साथमें तमाम धर्मों के निचोड स्वरुप पांच आज्ञाअें देते है। जो जीवन व्यवहार को आदर्श बना कर, आत्मामें निरंतर रहने में सहायभूत और रक्षक होती है।

क्रमिक मार्ग में क्रोध, मान, माया, लोभ परिग्रह आदि का धीरे धीरे त्याग करते करते अंतमें अहंकार संपूर्ण शुध्ध हो जाता है याने कि अहंकारमें अेक भी परमाणु क्रोधका, मानका, मायाका या लोभका नहीं रहता, तब संपूर्ण शुध्ध अहंकार बनता है, वो शुद्ध अहंकार शुध्धात्मासे अभेद हो जाता है। और अक्रम मार्ग में ''ज्ञानी'' कृपासे प्रथम अहंकार शुध्ध हो जाता है और खुद शुध्धात्मा पदमें आ जाता है। फिर डिस्चार्ज क्रोध, मान, माया, लोभ रह जाते है, जिनके उदयमें 'शुध्धात्मा' तन्मयाकार नहीं होता, इसलिए वे स्वभावसे 'डिस्चार्ज'

होकर खत्म हो जाते है। 'खुद' शुध्धात्मा हो गया, इसलिए नये कर्म नहीं चार्ज होते। नया कर्म तो तब ही 'चार्ज' होता है कि जब मनकी अवस्थामें 'खुद' 'अवस्थित' हो जाता है, जिसका 'रीझल्ट' 'व्यवस्थित' आता है। ''ज्ञानी पुरुष'' अहंकार को शुद्ध कर देते है, सूक्ष्म क्रियाओं में भी बादमें 'खुद' जुदा रहता है, जिससे कर्तापद उत्पन्न ही नहीं होता और कर्म 'चार्ज' नहीं होता। खुद निरंतर अकर्ता भावमें रहता है, उतना ही नहीं, ''व्यवस्थित'' किस तरह से कर्ता है, उसका संपूर्ण दर्शन रहता है। कर्तापद छूट गया, तो कर्म नहीं बंधाता।

क्रमिक मार्ग का 'बेझमेन्ट' आज सड गया है, इसलिए क्रमिक मार्ग 'फ्रेक्चर' हो गया है, इसीलिए अक्रम मार्ग का भव्य उदय कुदरती तौर से हुआ है। क्रमिक्र मार्गका 'बेझमेन्ट' क्या है? मन, वचन, कायाका अेकात्मयोग होना, याने मनमें जो है, वही वाणीसे बोलता है और वही वर्तनमें आता है। आज तो मनमें अेक, वाणीमें दूसरा और वर्तन में तृतीयम ही होता है। इसलिए क्रमिक मार्ग चल नहीं सकता। अक्रम मार्गमें तो मन, वचन, काया को बाजु 'पर' रखकर निज स्वरुपका निरंतर लक्ष बैठ जाता है। फिर तो जैसा उदय आता है, उसका सगभावसे निकाल कर देनेका रहता है।

जीवन व्यवहारके रोजींदे ज्ञान की उतनी ही स्पष्टता की है, जितनी आत्मा, परमात्माकी! उनके पास केवल आत्मा परमात्माकी ही बातें नहीं है, रोज अनुभवमें आते हुअे संसार व्यवहारकी ज्ञानमय द्रष्टि की बातें भी है। इस व्यवहारसे ऐसे बाहरसे भागकर तो नहीं छूट सकते। किन्तु व्यवहारमें संपूर्ण नाटककी तरह सुंदर अभिनय अदा करते करते व्यवहार पूरा करना है। नाटकमें राजा भर्तृहरीका अभिनय करता है, वह नट, लक्ष्मीचंद जुदा और भर्तृहरी का अभिनय जुदा - अैसे रखता है। उसी तरह पतिका, शेठका, पिताका अभिनय करने वाला जुदा और स्वयं शुध्धात्मा जुदा, यह भेदरेखा को कायम हाजिर रखकर इस जीवननाटक के सामने आयी हुई हर अदाकारी पूर्ण वफादारीसे अदा करने की प्रतिक्षण जागृति अक्रम विज्ञान द्वारा ''ज्ञानी पुरुष'' प्रदान करते है। अर्थात् ''ज्ञानी पुरुष'' सिर्फ आत्मज्ञान ही नहीं देते, बल्कि संसार व्यवहार नीकाल करने के लिए व्यवहार ज्ञान भी सर्वोच्च प्रकार का देते है। उनकी पांच आज्ञाएं व्यवहार को संपूर्ण शुध्ध बना देती है।

दादाश्री वही दृढतासे हमेशा कहते है कि मुझे मिलने के बाद अगर तुम्हे मोक्ष अनुभवमें न आवे तो तुम्हे ''ज्ञानी'' मीले ही नहीं। यही पर, सदेह मोक्ष वर्तनामें आना चाहिए।

पक्ष और मोक्ष दोनो विरोधाभास है, ''ज्ञानी पुरुष'' निष्पक्षपाती होते है। उनकी द्रष्टि में सभी अपनी अपनी जगह पर 'करेक्ट' ही दिखते है। जीवमात्रके साथ अभेद रहते है। ''ज्ञानी पुरुष'' सेन्टरमें बैठे हुअे है, इसलिए उन्हें कोई व्यक्तिसे कोई धर्मसे, कोई 'व्यु पोईन्टसे' मतभेद नहीं होता।

विनाशी वस्तुमें सनातन सुखकी शोधमें यह द्रष्टि अनंत अवतारसे भटकती है। इस मिथ्यात्व द्रष्टिको लोकद्रष्टि और भी अवगाढत्व देती है। लोकद्रष्टि तो दक्षिण को उत्तर मानके चलाती है। एक बार ''ज्ञानी'' की द्रष्टि से द्रष्टि मील जाय, एक हो जाय तो निज स्वरुप द्रष्टि में आ जाता है। निज स्वरुप में ही सनातन सुख है जिसका अेक बार अनुभव हो जाता है फिर वह कभी नहीं जाता। फिर द्रष्टि की विनाशी वस्तुओंमें सुखकी खोज पूरी हो

जाती है, और अविनाशी आत्मतत्त्व का स्वाभाविक सुखका वेदन निरंतर रहता है।

सक्कर मीठी होती है, ऐसी मीठी होती है, शहद से भी अच्छी, गुडसे भी उमदा, ऐसा वर्णन हम सुनते है किन्तु कोई सक्कर मूँहमें डालकर उसके स्वादका स्वयं अनुभव नहीं कराता। ''ज्ञानी पुरुष'' ही अैसे है जो तुर्तही मूँहमें सक्कर रखकर अनुभव कराते है। आत्मा अैसा है, वैसा है, अैसी बातों से कुछ नहीं बनता, वह तो ''ज्ञानी पुरुष'' की कृपासे उसकी अनुभूति हो तब छूटकारा होता है, अन्यथा नहीं।

तमाम शास्त्र नयी द्रष्टि दे सकते है किन्तु द्रष्टि कोई नहीं बदल सकता। द्रष्टि बदलना तो ''ज्ञानी पुरुष'' के सिवाय नामूमकीन है। अवस्था द्रष्टि को मीटाकर आत्मद्रष्टि कराना, यह केवल ''ज्ञानी पुरुष'' का काम है। जीसकी आत्मद्रष्टि हुई है, जो अन्यों को आत्मद्रष्टि कराने का सामर्थ्य रखता है वही आत्मद्रष्टि करा सकते है। खुद मिथ्या द्रष्टिवाला है। वह दूसरोंकी मिथ्याद्रष्टि कैसे तोड सकता है?

आत्मा निरालंब वस्तु है, किन्तु उसे पानेके लिए ''ज्ञानी पुरुष'' का आलंबन लेना पडता है, क्यों कि आत्मप्राप्तिका ''ज्ञानी पुरुष'' अंतिम साधन है। ''अक्रम ज्ञानी'' ने जो आत्मा देखा है, अनुभव किया है, वह आत्मा कुछ ओर है, कल्पनातित है, इसलिए तो वे, जो लाखों जन्ममें नहीं बदली जाती वह द्रष्टि एक घंटे में बदल देते है। अेक घंटेमें देह और आत्मा को भिन्न अनुभव करानेवाले ज्ञानीकी अपूर्व, अजोड, अद्‌भूत सिध्धिके प्रति सानंदाश्चर्य अवक्तव्य भावसभर उद्‌गार के सिवाय अन्य क्या हो सकता है!!

अेक बार तो एतबार ही नहीं आता किन्तु ''ज्ञानी पुरुष'' के प्रत्यक्ष योग की युति कर के, सर्व भाव चरणोंमें समर्पित करके, परम विनयसे, आत्मा प्राप्त जो कर लेता है, उसकी तो दुनिया ही बदल जाती है। संसारके सारे दुःखोसे मुक्ति मिलती है, संसारकी आधि, व्याधि और उपाधिमें निरंतर समाधि, सहज समाधि रहती है। वाचकको इस बात पर एतबार नहीं आवे अैसी ही यह बात है, किन्तु यह अनुभवपूर्ण हकीकत है। आज बीस हजार पुण्यात्माओंने एसी प्राप्ति की है, और भीतरमें निरंतर आत्म सुखमें रहते है और बाहर जीवन व्यवहारमें, घरमें, इस घोर कलियुगमें भी सत्युग जैसा, स्वर्ग जैसा सुख पा रहे है। बलिहारी तो उस ज्ञान की है जो इस कालमें धूपकाल के रणमें मध्याहन् समयमें विशाल वटवृक्ष के समान होकर अपनी शीतल छाँवमें तप्तजनों को भीतरी-बाहीरी शीतलता प्रदान करते है।

निरंतर आत्मामें ही जिनका वास है, जो केवल मोक्ष स्वरुप हो गये है, मन, वचन, कायाका मालिकी भाव संपूर्ण खत्म हो चूका है, अहंकार ममता संपूर्ण विलय हो गये है ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' आज कलिकालमें सच्चे मुमुक्षुओं के लिए ही प्रगट हुअे है।

रोज रोज अलौकिकता के दर्शन नये नये रुपसें बरसों से होते रहते है। असीम को कलमसे कैसे सिमित कीया जाय? फिर भी ''ज्ञानी पुरुष'' का अल्प परिचय कागज-कलमकी मर्यादामें रहकर दिया है। संपूर्ण अनुभव तो उनके प्रत्यक्ष योगसे ही उपलब्ध होता है।

◇◇◇

संपूज्यश्री ''दादाश्री'' गुजराती भाषी है किन्तु हिन्दी भाषीओंके साथ कभी कभी हिन्दीमें बोल लेते है। इनकी हिन्दी 'प्योर'

हिन्दी नहीं है, फिर भी सुननेवालेको उनका अंतर आशय 'अेक्झेट' पहूँच जाता है। उनकी वाणी हृदय स्पर्शी, हृदयभेदी होने के कारण जैसी निकली वैसी ही संकलित करके प्रस्तुत की गई है ताकि सुज्ञ वाचकको उनके 'डिरेक्ट' शब्द पहूँचे। उनकी हिन्दी याने गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दीका मिश्रण। फिर भी सुनने में, पढने में बहुत मीठी लगती है, नेचरल लगती है, जीवंत लगती है। जो शब्द है, वह भाषाकिय द्रष्टिसे सीधे सादे है किन्तु ''ज्ञानी पुरुष'' का दर्शन निरावरण है, इसलिए उनके प्रत्येक वचन आशयपूर्ण, मार्मिक मौलिक और सामनेवाले के View Point को exact समजकर नीकलने के कारण श्रोता के दर्शनको सुस्पष्ट खोल देते है और ओर ऊंचाई पर ले जाते है।

ऐसे ''ज्ञानी पुरुष'' का दर्शन, ज्ञान, चारित्र उनकी अनुभव दशा, उनका 'ओब्झर्वेशन' आदि वाणीसे ही प्रगट होता है, वह वाणी प्रस्तुत ग्रंथमें प्रकाशित की गई है, जो ''ज्ञानी'' की पहचान करा देती है, इतना ही नहीं, सुज्ञ वाचकको नयी द्रष्टि, नयी राह मोक्षपथ काटनेको देती है।

अैसे ''ज्ञानी पुरुष'' लाखों लोगों के पुण्योदयसे भारत भूमी पर, गुजरातकी चरो त्तर भूमिमें भादरण गाँवमें प्रगट हुअे है, जो इस विश्वमें किस तरह शांति हो, किस तरह लोंग आत्मज्ञान पाकर संसार के चक्कर से छूटे यह भावना को साकार करने के लिए दिनरात जूटे हुए रहते है। उनकी वाणी ही अेकमेव ऐसा साधन है कि जो उनके भीतरमें प्राप्त हुआ ज्ञान आम जनको पहूँचा जाय। बरसोंसे सुबह साडे छः बजेसे रातको साडे ग्यारह बजे तक वे अविरत आत्मा-परमात्मा तथा संसारकी उलझनोंका सुझाव लोगों को अपनी वाणीसे देते रहते है। उस वाणीको प्रस्तुत ग्रंथमें संकलित किया गया है। हृदय-पूर्वक की भावना है कि जो भी कोई मुमुक्षु, जिज्ञासु या विचारक उसका सम्यक् प्रकारसे अध्ययन करेगा उसे अवश्य सम्यक् मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है, जिसमें कोई शंका नहीं।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी सरल होती है, अहंकार के बिना, प्रगट परमात्माको 'डिरेक्ट' स्पर्श करके निकली हुई यह साक्षात् सरस्वती है; यह वाणी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और निमित्तके आधीन निकलती है, प्रस्तुत ग्रंथमें संकलित की हुई इस वाणीमें सुज्ञ वाचकको यदि कहीं कभी गलती लगे तो वह क्षति ''ज्ञानी'' की वाणी में नहीं, बल्कि संकलनकी है, जिसके लिए हृदयसे क्षमा प्रार्थना !

जय सच्चिदानंद

अनुक्रमणिका

[१]

१) व्यवहारमें, वास्तवमें वाणीका वक्ता कौन १

[२]

१) ''ज्ञानी पुरुष'' कौन ? ''दादा भगवान'' कौन ? ५

[३]

१) क्या आप अपने धर्ममें हो ? ८

[४]

१) Indent— किया किसने ? जाना किसने ? १२

[५]

१) जगतकी वास्तविकता ! १५

[६]

१) 'I' कौन ? 'My' कौन ? १९

[७]

१) अध्यात्ममें Blunders क्या ?
Mistakes क्या ? २३

[८]

१) कर्मबंध, कर्तव्यसे या कर्ताभावसे ? २५
२) Responsible कौन ? २७
३) संसार अपनी ही डखलोंका प्रतिसाद ! २८
४) अहंकारका Judgement क्या ? ३१
५) ये World-Planned या Accident ? ३२

દાદા ભગવાનના અસીમ જયજયકાર હો